International Journal for Innovative Engineering and Management Research
PEER REVIEWED OPEN ACCESS INTERNATIONAL JOURNAL
www.ijiemr.org

आधुनिक हिन्दी कहानियों में चित्रित नारी समस्या

डॉ.नागरगोजे ए.बी.

एच.पी.टी.आर.वाय.के.

महाविद्यालय, नाशिक—५.

प्रस्तावना:—

अनादिकाल से वर्तमान नारी कभी आदर की पात्र रही है, तो कभी अनाद की। कहा जा सकता है, मानव—जीवन में स्त्री—पुरूष का अन्योन्यश्रित सम्बन्ध है। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष किसी भी रूप में स्त्री—पुरूष के बिना और पुरूष—स्त्री के बिना अधूरा है। दोनों की समानता को स्पष्ट करते हुए महात्मा गांधी जी भी कहते है ''सैद्धान्तिक रूप से नर—नारी दोनों एक हैं, दोनों में समान आत्मा निवास करती हैं, दोनों में समान अनुभूति विद्यमान होती है, दोनों के जीवन की समान ही समस्याएँ होती है, अत: समाज के दोनों ही दो शरीर एक प्राण के रूप में आवश्यक अंग है।''

भारतीय संस्कृति ने नारी का गुण गौरव मात्र कागजों तक ही सीमित रखा हैं परंतु वास्तव में उस पर अक्सर अन्याय ही होता आ रहा है। चाहे वह उच्च वर्ग की हो, या मध्यम वर्ग की हो, या फिर पिछड़ी जाति की ही क्यों न हो। नारी को भारतीय मानसिकता ने कभी भी न्याय नहीं दिया है। अन्यथा उस पर अन्याय ही किया है। आज भी स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में नारी अपने आपको असुरक्षित ही पाती हैं उसे केवल भोग की वस्तु माना जाता हैं स्वातंत्र्य पूर्व भारत में तो नारी की स्थिति बहुत ही भयावह थी। स्त्री और पुरूष दोनों एक रथ के पहिए हैं। कहना होगा कि दोनों एक दूसरे

के बिना अधूरे हैं। परंतु आम तौर पर स्त्री के विकास पर ही पुरूष की उन्नति निर्भर है। लाला लाजपत राय ने भी इससे पूरक बात कही है। उनका कथन द्रष्टव्य है, ''स्त्रियों का प्रश्न पुरूषों का प्रश्न है। क्योंकि दोनों का एक दूसरे पर प्रभाव पड़ता है, चाहे भूतकाल हो चाहे भविष्य पुरूषों की उन्नति बहुत कुछ स्त्रियों की उन्नति पर निर्भर है।'' लाला लाजपतराय के विचारों पर गौर से विचार करने पर मुझे ऐसा लगता है— क्या उनके विचारों का अनुकरण करने में हमारे देश के राजनेता आज भी सफल रहे हैं? भिन्न—भिन्न प्रदेशों में आज भी नारी अन्याय, अत्याचार, बलात्कार आदि की शिकार बनी हुई है। नोकरी पेशा करनेवाले स्त्री की स्थिति भी इतनी अच्छी नहीं हैं, या किसी भी पद पर काम करने वाली नारी स्वतंत्र रूप में काम नहीं कर सकती। आजादी के बाद भी नारी एक पंछी की तरह स्वयं को बंदिस्त महसूस कर रही हैं।

भारतीय समाज में दलित नारी हो, मुस्लिम नारी हो उच्च वर्ग की नारी हो। नारी सुख दु:ख में पुरूषों को सहयोग करती रही है। ऐसी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती नारी को समाज ने चाह दिवारी में कैद किया है। हम गर्व से कह रहे हैं कि हम २१वीं सदी में जी रहे हैं, स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में स्वयं की भूमिका निभा रही है। परन्तु क्या २१वीं सदी में भी स्त्री प्रत्येक क्षेत्र में स्वयं की भूमिका निभा रही है। परंतु क्या २१वीं सदी में भी स्त्री के प्रति भौतिक सुख के लिए पुरूष स्त्री से किस प्रकार व्यवहार कर रहा है। २२ नवंबर, २००० के 'इंडिया टुडे' में प्रकाशित प्रख्यात कथा लेखिका चित्रा मुद्गल की कहानी 'वाइफस्वैपी' पड़ने के बाद मुझे ऐसा लगा कि भारतीय पुरूष, (शिक्षित उच्च वर्ग) स्त्री में विलास या भोग की वस्तु के रूप में उसी का उपयोग किस प्रकार कर रहा है। इस कहानी में चित्रा मुद्गल ने

बदलती मानसिकता तथा विदेशी संस्कृति का अनुकरण हमारे समाज में एक बीमारी जैसा फैल रहा है। इस बीमारी की शिकार स्त्री बन गई है। कहानी की कथा संक्षेप में इस प्रकार है— पार्टी में एक जग में बियर के झाग में सभीकी गाड़ियों की कथा संक्षेप में इस प्रकार है— पार्टी में एक जग में बियर के झाग में सभी की गाड़ियों की चाभी डाल दी जाती जिसकी चाभी हाथ लगती, उसकी पत्नी उस रात चाभी पाने वाले की....।''

साठोत्तरी कहानियों में कहानी लेखिकाओं ने स्त्री की मजबुरियों का यथार्थ वर्णन किया है। पती—पत्नी सम्बन्धों का यथार्थ वर्णन करते हुए नारी के प्रति पुरूष जाति की मनोवृत्ति तथा स्त्री की ओर देखने का दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। लेखिकाओं ने सामाजिक घटनाओं को वास्तविक रूप में प्रस्तुत कर समाज को नंगा किया है। वर्तमान युग में भी नारी की भयावह दशा बनाने में पुरूष जिम्मेदार है।

कमलेश्वर की ''तलाश'' कहानी में आधुनिक नारी के जीवन की विसंगति का चित्रण है। कहानी की ममी और सुमी अपनी मजबुरियों में जीने वाले दो पात्र है। कथा साहित्य में कथाकार नारी जीवन की भिन्न—भिन्न समस्याओं को उजागर करते रहे हैं। साथ ही साथ परिवार के अंतर्गत भिन्न—भिन्न समस्याओं का सामना करती नारियों का सही ढंग से कथाकारों ने अंकन किया है। दहेज प्रथा हमारे समाज में ऐसी प्रथा बन गई है। इसी कारण आज भी समाज शिक्षित होकर भी दहेज प्रथा शुरू ही है दहेज के कारण उम्र होने के बाद भी कुछ पिता अपनी बेटी का विवाह नहीं कर सकते। दहेज के शिकार समाज का सभी स्तर बन चुका है। समाज में आन्दोलन नेताओं का

नारी दृष्टिकोण, यह सब एक भुलावा ही बन गया है चाहे मध्यम वर्ग हो उच्च वर्ग या पिछड़ा वर्ग, दहेज की लेन—देन सुरू ही रही है।

मालती जोशी की महत्वपूर्ण कुछ कहानियाँ दहेज—पीड़ित नारी की गहन समस्या की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करती है—'दुसरी दुनियाँ कवच' कन्यादान, बकुल फिर आना, छोटी बेटी का भाग्य, आतनाचक्र, आखिरी सौगात, औकात, कोऊ न जाननहार, बोल री कठपुतली, रानियाँ, कोख का दर्प, आदि कहानियाँ संम्मिलित हैं।

'बकुल फिर आना' कहानी में मालती जोशी ने स्पष्ट किया है कि माँ—बाप प्राय: बेटी की सुरक्षा की गारंटी हेतु दान—दहेज देते हैं, फिर भी गारंटी नहीं मिल पाती। बकुल की शादी में सोना और नगद रकम दी जाने के बावजूद बकुल के ससुराल वाले अतिरिक्त लालच में अमानुष बनकर बकुल को जलाकर मारते हैं। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि बकुल का पति हत्यारा है, यह मालूम होने के बावजूद एक मजबूर पिता अपनी लड़की का ब्याह बकुल के विधुर पति के साथ इसलिए कराता है क्योंकि वह दुहाजू होने से सस्ते में मिल पाया था।

चित्रा मुद्गल की ''मुआवजा'' कहानी में शैलू को उसके पति और ससुराल वाले ने उसके अधिकारों से वंचित रहा शैलू विमा परिचारिका थी। उसकी अकस्मित मृत्यु होने पर मुआवजे की रकम घोषित करते ही शैलू के पति और सम्बन्धी सामने आये। चित्रा मुद्गल की इस कहानी में इन्सानियत का लोप और आर्थिक मोह दिखाया गया है। नारी समाज का एक पहिया होते हुए भी पीछे छूट गयी है। वह स्वयं को अंधेरे में रखकर पुरूष के लिए रोशनी की मुर्ति गढ़ती रहती है। जिंदगी भर गृहस्थी के जुए में जुतती रहती है वह अपने

पति, बच्चों तथा परिवार की खुशी के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर देती है।

निष्कर्ष:—

स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में नारी के भिन्न—भिन्न रूपों का अंकन किया है। साथ ही साथ उसके पत्नी रूप का चित्रण करते हुए कथा लेखिकाओं तथा लेखकों ने यथार्थ दुख भरी कहानी बतायी है। तथा प्रस्तुत कथा साहित्य का अध्ययन करने के बाद और नारी दशा को देखने के बाद मुझे रामदरश मिश्र की कविता याद आती है जो वास्तविकता को प्रस्तुत करती है—

'कि एक और थी जो चूल्हे—चक्की

बरतन भाँडे की लय पर जीवन के मंत्र पढ़ती रही

जो खुद को अंधेरे में रखकर

जिंदगी भर रोशनी की मूर्ति गढ़ती रही।'

प्रस्तुत कर्ता

डॉ.नागरगोजे ए.बी.

एच.पी.टी.आर.वाय.के.

महाविद्यालय, नाशिक—५.